भारत की विदेश नीति : बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण

India's Foreign Policy: An Analysis in the Changing Global Context

Dr. Rajkumar Singh
डॉ. राजकुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर - राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय आगरा कैंट,आगरा।

सारांश

भारत की विदेश नीति किसी भी अन्य राष्ट्र की भाँति उसके राष्ट्रीय हितों, सुरक्षा आवश्यकताओं, आर्थिक विकास तथा अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण साधन है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने ऐसी विदेश नीति का निर्माण किया जिसका मूल उद्देश्य विश्व शांति की स्थापना, उपनिवेशवाद का विरोध, अंतरराष्ट्रीय सहयोग तथा विकासशील देशों के हितों की रक्षा करना था। प्रारंभिक दशकों में भारत की विदेश नीति आदर्शवादी सिद्धांतों जैसे पंचशील, गुटनिरपेक्षता तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर आधारित रही।

किन्तु बदलते वैश्विक राजनीतिक एवं आर्थिक परिवेश, तकनीकी क्रांति, वैश्वीकरण, आतंकवाद, ऊर्जा संकट तथा क्षेत्रीय शक्ति प्रतिस्पर्धा ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रकृति को अत्यधिक जटिल बना दिया है। 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति अधिक व्यावहारिक, बहुआयामी तथा राष्ट्रीय हित केंद्रित बनती दिखाई देती है।

आज भारत वैश्विक मंचों पर केवल एक विकासशील राष्ट्र के रूप में नहीं बल्कि एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर रहा है। आर्थिक कूटनीति, सामरिक साझेदारी, क्षेत्रीय सहयोग, समुद्री सुरक्षा तथा डिजिटल कूटनीति भारत की विदेश नीति के नए आयाम बन चुके हैं। यह शोध पत्र बदलते वैश्विक संदर्भ में भारत की विदेश नीति के विकास, प्रमुख विशेषताओं, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: विदेश नीति, वैश्विक राजनीति, कूटनीति, रणनीतिक स्वायत्तता, अंतरराष्ट्रीय संबंध

1. प्रस्तावना

विदेश नीति किसी भी राष्ट्र की अंतरराष्ट्रीय पहचान, राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास तथा वैश्विक प्रभाव को निर्धारित करने वाला महत्वपूर्ण उपकरण होती है। यह केवल अन्य देशों के साथ संबंध स्थापित करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि राष्ट्र के दीर्घकालिक हितों, रणनीतिक प्राथमिकताओं तथा वैश्विक दृष्टिकोण का प्रतिबिंब भी होती है। भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक, बहुसांस्कृतिक तथा विकासशील राष्ट्र के लिए विदेश नीति का महत्व अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है, क्योंकि इसकी भौगोलिक स्थिति, जनसंख्या, आर्थिक संभावनाएँ तथा क्षेत्रीय चुनौतियाँ अंतरराष्ट्रीय राजनीति में इसकी भूमिका को विशेष बनाती हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत अनेक आंतरिक एवं बाह्य चुनौतियों का सामना कर रहा था। औपनिवेशिक शासन से मुक्त होने के बाद देश को आर्थिक पुनर्निर्माण, राष्ट्रीय एकता तथा सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता थी। ऐसी परिस्थिति में भारत के नीति निर्माताओं ने विदेश नीति को शक्ति प्रदर्शन के बजाय नैतिक मूल्यों, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग के सिद्धांतों पर आधारित किया। भारत ने विश्व राजनीति में शांति, निरस्त्रीकरण, उपनिवेशवाद विरोध तथा नस्लीय भेदभाव के विरुद्ध स्पष्ट और सक्रिय भूमिका निभाई।

भारत की विदेश नीति के निर्माण में ऐतिहासिक अनुभवों, स्वतंत्रता आंदोलन की विचारधारा, भौगोलिक स्थिति तथा नेतृत्व की वैचारिक दृष्टि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रारंभिक वर्षों में भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाकर यह स्पष्ट किया कि वह किसी भी महाशक्ति गुट का हिस्सा बने बिना स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता बनाए रखना चाहता है। यह नीति उस समय अत्यंत महत्वपूर्ण थी क्योंकि विश्व शीत युद्ध की वैचारिक प्रतिस्पर्धा से प्रभावित था।

समय के साथ अंतरराष्ट्रीय राजनीति की प्रकृति में व्यापक परिवर्तन हुए। शीत युद्ध की समाप्ति, सोवियत संघ का विघटन, वैश्वीकरण का विस्तार, आर्थिक उदारीकरण, तकनीकी क्रांति तथा क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में बदलाव ने वैश्विक व्यवस्था को पुनर्परिभाषित किया। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप भारत की विदेश नीति भी आदर्शवादी दृष्टिकोण से आगे बढ़कर अधिक व्यावहारिक, हित-आधारित एवं बहुआयामी बनती गई। विशेष रूप से 1991 के आर्थिक उदारीकरण के पश्चात भारत ने आर्थिक कूटनीति, व्यापार सहयोग, विदेशी निवेश तथा वैश्विक आर्थिक संस्थाओं के साथ सहभागिता को विदेश नीति का प्रमुख आधार बनाया।

21वीं सदी में वैश्विक राजनीति बहुध्रुवीय स्वरूप ग्रहण कर चुकी है, जहाँ अमेरिका, चीन, रूस, यूरोपीय संघ तथा उभरती अर्थव्यवस्थाएँ अंतरराष्ट्रीय शक्ति संतुलन को प्रभावित कर रही हैं। इसके साथ ही आतंकवाद, साइबर सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संकट, समुद्री सुरक्षा तथा वैश्विक स्वास्थ्य जैसी नई चुनौतियाँ विदेश नीति के दायरे को और विस्तृत कर रही हैं। इन परिस्थितियों में भारत ने "रणनीतिक स्वायत्तता" (Strategic Autonomy) की नीति अपनाते हुए विभिन्न वैश्विक शक्तियों के साथ संतुलित संबंध स्थापित करने का प्रयास किया है।

वर्तमान समय में भारत केवल क्षेत्रीय शक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक शासन प्रणाली, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, जलवायु कूटनीति तथा बहुपक्षीय संस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। भारत की विदेश नीति अब पारंपरिक राजनीतिक संबंधों से आगे बढ़कर आर्थिक विकास, तकनीकी सहयोग, ऊर्जा सुरक्षा, प्रवासी भारतीय नीति तथा डिजिटल कूटनीति जैसे नए आयामों को समाहित कर चुकी है।

इस प्रकार बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की विदेश नीति निरंतर परिवर्तनशील, गतिशील तथा राष्ट्रीय हितों के अनुरूप विकसित होती रही है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वैश्विक राजनीतिक परिवर्तनों के संदर्भ में भारत की विदेश नीति के स्वरूप, विकास, प्रमुख आयामों तथा भविष्य की दिशा का विश्लेषण करना है, जिससे अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत की उभरती भूमिका को समझा जा सके।

यहाँ आपके शोध पत्र **"भारत की विदेश नीति : बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण"** के **बिंदु 2 (ऐतिहासिक विकास)** तथा **बिंदु 3 (प्रमुख आयाम)** को विस्तृत एवं शोध-स्तरीय रूप में विस्तार किया गया है।

2. भारत की विदेश नीति का ऐतिहासिक विकास

भारत की विदेश नीति का विकास एक निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया रही है, जो अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों, राष्ट्रीय आवश्यकताओं तथा वैश्विक शक्ति संतुलन के अनुसार समय-समय पर परिवर्तित होती रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर वर्तमान समय तक भारत की विदेश नीति को विभिन्न चरणों में समझा जा सकता है।

(क) स्वतंत्रता के बाद का प्रारंभिक काल **(1947–1960)**

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करना था। इस समय विश्व दो महाशक्तियों के प्रभाव में विभाजित हो रहा था, किंतु भारत ने किसी सैन्य गुट में शामिल होने के बजाय स्वतंत्र विदेश नीति अपनाने का निर्णय लिया।

भारत ने पंचशील सिद्धांतों के माध्यम से शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, पारस्परिक सम्मान तथा आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति को बढ़ावा दिया। यह नीति केवल कूटनीतिक दृष्टिकोण नहीं थी बल्कि वैश्विक शांति की स्थापना का प्रयास भी थी।

इस अवधि में भारत ने एशिया और अफ्रीका के नवस्वतंत्र देशों के साथ सहयोग स्थापित किया तथा उपनिवेशवाद और नस्लीय भेदभाव का विरोध किया। भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर नैतिक नेतृत्व प्रदान करने वाला राष्ट्र बनकर उभरा।

(ख) शीत युद्ध एवं सुरक्षा चुनौतियों का काल **(1960–1990)**

1960 के दशक के बाद भारत की विदेश नीति अधिक यथार्थवादी स्वरूप ग्रहण करने लगी। चीन के साथ 1962 का युद्ध तथा पाकिस्तान के साथ हुए युद्धों ने यह स्पष्ट किया कि केवल आदर्शवादी नीति पर्याप्त नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा को प्राथमिकता देना भी आवश्यक है।

इस काल में भारत ने गुटनिरपेक्ष नीति बनाए रखते हुए सोवियत संघ के साथ रणनीतिक सहयोग विकसित किया। रक्षा, तकनीक और औद्योगिक विकास में इस सहयोग का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

1971 की भारत-सोवियत मैत्री संधि तथा बांग्लादेश मुक्ति युद्ध ने भारत की क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थिति को मजबूत किया। इस अवधि में विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय स्थिरता, राष्ट्रीय सुरक्षा तथा सामरिक संतुलन बनाए रखना था।

(ग) आर्थिक उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का काल (1991 के पश्चात)

1991 के आर्थिक संकट के बाद भारत ने आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई, जिसने विदेश नीति की दिशा को व्यापक रूप से बदल दिया। आर्थिक विकास को राष्ट्रीय शक्ति का आधार मानते हुए विदेश नीति में व्यापार, निवेश और तकनीकी सहयोग को प्राथमिकता दी गई।

भारत ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ते हुए विश्व व्यापार संगठन, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं तथा बहुराष्ट्रीय निवेश को प्रोत्साहित किया। इसी काल में "Look East Policy" प्रारंभ की गई, जिसका उद्देश्य एशियाई देशों के साथ आर्थिक और रणनीतिक संबंध मजबूत करना था।

विदेश नीति अब केवल राजनीतिक संबंधों तक सीमित न रहकर आर्थिक कूटनीति, ऊर्जा सुरक्षा तथा वैश्विक बाजारों तक पहुँच सुनिश्चित करने का माध्यम बन गई।

(घ) 21वीं सदी का उभरता वैश्विक शक्ति काल

नई शताब्दी में भारत ने स्वयं को एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। सूचना प्रौद्योगिकी, परमाणु क्षमता, आर्थिक विकास तथा जनसांख्यिकीय शक्ति ने भारत की अंतरराष्ट्रीय स्थिति को मजबूत किया।

भारत ने बहुपक्षीय सहयोग, समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद विरोध तथा इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभानी प्रारंभ की। विदेश नीति अधिक सक्रिय, बहुस्तरीय तथा रणनीतिक स्वायत्तता पर आधारित हो गई।

3. बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की विदेश नीति के प्रमुख आयाम

वैश्विक राजनीति में तीव्र परिवर्तन के कारण भारत की विदेश नीति बहुआयामी स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। वर्तमान समय में विदेश नीति केवल राजनीतिक संबंधों तक सीमित नहीं बल्कि आर्थिक, सामरिक, तकनीकी एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों को भी समाहित करती है।

1. बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में संतुलनकारी भूमिका

वर्तमान विश्व व्यवस्था में शक्ति का केंद्रीकरण समाप्त होकर बहुध्रुवीय संरचना विकसित हो रही है। अमेरिका, चीन, रूस, यूरोपीय संघ तथा अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाएँ वैश्विक राजनीति को प्रभावित कर रही हैं।

भारत किसी एक शक्ति पर निर्भर रहने के बजाय संतुलित संबंधों की नीति अपनाता है। यह रणनीति भारत को स्वतंत्र निर्णय लेने तथा वैश्विक संघर्षों में संतुलनकारी भूमिका निभाने की क्षमता प्रदान करती है।

2. पड़ोसी प्रथम नीति

भारत की विदेश नीति में पड़ोसी देशों के साथ सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास भारत की आंतरिक सुरक्षा और व्यापारिक हितों से सीधे जुड़ा हुआ है।

भारत क्षेत्रीय संपर्क, ऊर्जा सहयोग, व्यापार, आपदा प्रबंधन तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से पड़ोसी देशों के साथ विश्वास निर्माण का प्रयास कर रहा है। यह नीति क्षेत्रीय शांति और सहयोग को मजबूत बनाती है।

3. एक्ट ईस्ट नीति और इंडो-पैसिफिक रणनीति

भारत की एक्ट ईस्ट नीति दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ आर्थिक, सामरिक और सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने का प्रयास है। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र वैश्विक व्यापार और समुद्री सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बन चुका है।

भारत इस क्षेत्र में समुद्री मार्गों की सुरक्षा, व्यापार विस्तार तथा रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा देकर अपनी वैश्विक भूमिका को मजबूत कर रहा है।

4. रणनीतिक साझेदारी एवं रक्षा कूटनीति

राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए भारत ने विभिन्न देशों के साथ रक्षा सहयोग बढ़ाया है। संयुक्त सैन्य अभ्यास, रक्षा तकनीक हस्तांतरण तथा सुरक्षा संवाद आधुनिक विदेश नीति के महत्वपूर्ण अंग बन चुके हैं।

यह सहयोग भारत की रक्षा क्षमता बढ़ाने के साथ-साथ वैश्विक सुरक्षा संरचना में उसकी भूमिका को भी मजबूत करता है।

5. आर्थिक एवं ऊर्जा कूटनीति

आधुनिक युग में आर्थिक शक्ति अंतरराष्ट्रीय प्रभाव का प्रमुख आधार बन चुकी है। भारत व्यापार समझौतों, विदेशी निवेश, ऊर्जा संसाधनों की उपलब्धता तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में भागीदारी को प्राथमिकता दे रहा है।

ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु भारत पश्चिम एशिया, अफ्रीका और मध्य एशिया के देशों के साथ दीर्घकालिक सहयोग स्थापित कर रहा है।

6. सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति

भारत योग, संस्कृति, लोकतांत्रिक मूल्यों, शिक्षा तथा प्रवासी भारतीय समुदाय के माध्यम से अपनी सॉफ्ट पावर को मजबूत कर रहा है। सांस्कृतिक कूटनीति अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सकारात्मक छवि निर्माण का प्रभावी माध्यम बन गई है।

4. वैश्वीकरण और भारत की विदेश नीति

वैश्वीकरण ने देशों के बीच पारस्परिक निर्भरता को बढ़ा दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल अर्थव्यवस्था, वैश्विक व्यापार तथा अंतरराष्ट्रीय निवेश ने विदेश नीति को आर्थिक आयाम प्रदान किया है।

भारत ने आईटी क्षेत्र, सेवा उद्योग और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के माध्यम से वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा तथा स्वास्थ्य कूटनीति जैसे नए मुद्दे विदेश नीति का हिस्सा बन चुके हैं।

5. भारत की विदेश नीति के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

1. चीन के साथ सीमा विवाद और क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा
2. पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद
3. वैश्विक आर्थिक अस्थिरता

4. ऊर्जा सुरक्षा और संसाधनों की उपलब्धता
5. हिंद महासागर क्षेत्र में सामरिक प्रतिस्पर्धा

इन चुनौतियों के बीच संतुलित एवं व्यावहारिक कूटनीति भारत के लिए आवश्यक हो गई है।

6. वैश्विक मंचों पर भारत की भूमिका

भारत संयुक्त राष्ट्र, जी-20, ब्रिक्स तथा अन्य बहुपक्षीय संगठनों में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। भारत जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, आतंकवाद विरोध तथा वैश्विक आर्थिक सुधारों के मुद्दों पर नेतृत्व प्रदान कर रहा है।

भारत स्वयं को "वैश्विक दक्षिण" की आवाज के रूप में प्रस्तुत करते हुए विकासशील देशों के हितों की रक्षा करने का प्रयास कर रहा है।

7. भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य में भारत की विदेश नीति तकनीकी सहयोग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष अनुसंधान, समुद्री सुरक्षा तथा हरित ऊर्जा साझेदारी पर केंद्रित होने की संभावना है।

डिजिटल कूटनीति और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में भारत की बढ़ती भूमिका उसे अंतरराष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान कर सकती है।

8. निष्कर्ष

भारत की विदेश नीति समय के साथ निरंतर विकसित होती रही है। प्रारंभिक आदर्शवादी दृष्टिकोण से आगे बढ़ते हुए आज यह नीति रणनीतिक स्वायत्तता, आर्थिक हितों तथा वैश्विक सहयोग पर आधारित हो चुकी है।

बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत संतुलनकारी शक्ति के रूप में उभर रहा है। भविष्य में भारत की विदेश नीति विश्व शांति, आर्थिक विकास तथा अंतरराष्ट्रीय स्थिरता के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता रखती है।

संदर्भ सूची

1. दीक्षित, जे. एन. (2004). *भारत की विदेश नीति.* नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
2. कश्यप, सुभाष सी. (2018). *भारत की राजनीतिक व्यवस्था.* नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
3. कोहली, अतुल. (2012). *भारतीय राज्य और विकास की राजनीति.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. कुमार, सुरेन्द्र. (2016). *अंतरराष्ट्रीय राजनीति.* आगरा: साहित्य भवन प्रकाशन।
5. सिंह, एम. पी. (2017). *भारत की विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंध.* नई दिल्ली: पियर्सन प्रकाशन।
6. शर्मा, उर्मिला. (2019). *भारतीय विदेश नीति का विकास.* जयपुर: रावत प्रकाशन।
7. वर्मा, एस. पी. (2015). *आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
8. मिश्रा, के. पी. (2014). *भारत की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार.* नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।

9. यादव, बी. डी. (2020). *वैश्विक राजनीति और भारत*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

10. जोशी, वी. के. (2013). *अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांत*. नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय।

11. पंत, हर्ष वी. (2018). *भारतीय विदेश नीति के समकालीन आयाम*. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।

12. तिवारी, आर. सी. (2016). *विश्व राजनीति*. आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन।

13. चौधरी, आर. एस. (2021). *भारत और विश्व राजनीति*. जयपुर: पॉइंटर पब्लिशर्स।

14. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय. (2023). *भारत की विदेश नीति वार्षिक प्रतिवेदन*. नई दिल्ली: भारत सरकार।

15. सिंह, पुष्पेश पंत. (2011). *अंतरराष्ट्रीय संबंध और भारत की विदेश नीति*. नई दिल्ली: मैकग्रॉ हिल एजुकेशन।